**समय : 2½ घंटे** **पूर्णांक : ७५**

**सूचना : १. सभी प्रश्न अनिवार्य है |**
**२. सभी प्रश्नों के लिए अंक समान है |**

**प्रश्न १. निम्नलिखित अवतरण की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए|** **(३०)**

**(क)** "एक नाव थी, और न उसमे डाहें लगते, या पतवार,
तरल तरंगो में उठ-गिरकर बहती पगली बारम्बार |
लगते प्रबल थपेड़े, धुंधले तट का था कुछ पता नहीं,
कातरता से भरी निराशा देख नियति पथ बनी वहीं |
लहरे व्योम चूमती उठती,चपलायें असंख्य नचतीं,
गरल जलद की खड़ी झड़ी में बुँदे निज संसृति रचतीं |"

**(ख)** "हाँ मुझे स्मरण है:
बदली कौंध -पत्तियों पर वर्षा – बूंदों की पट पट |
घनी रात में महुए का चुपचाप टपकना
चौके खग शावक की चिंहुक |
शिलाओं को दुलारते वन झरने के
द्रुत लहरीले जल का कल निनाद |"

**(ग)** "इसीलिए मैं हर गली में / और हर सड़क पर
झाँक झाँक देखता हूँ हर एक चेहरा,
प्रत्येक गतिविधि / प्रत्येक चरित्र
व हर एक आत्मा का इतिहास
हर एक देश व राजनीतिक परिस्तिथि
प्रत्येक मानवीय स्वानुभूत आदर्श
विवेक प्रक्रिया, क्रियागत परिणति!!"

**प्रश्न २. निम्नलिखित में से किन्ही दो दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए |** **(३०)**

**(च)** कामायनी की कथावस्तु का वर्णन कीजिए |
**(छ)** 'बना दे चितेरे' कविता में निहित आध्यात्मिक दृष्टिकोण की समीक्षा कीजिए |
**(ज)** मुक्तिबोध के काव्य में मानव का यथार्थ वादी रूप दृष्टिगोचर होता है, इस भाव को विस्तार से समझाइए |



9F96E3C1CD55D8359CF8CE7B71B600A3

**प्रश्न ३. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए |** **(१५)**

**(त)** कामायनी की श्रद्धा |

**अथवा**

कामायनी की इड़ा |

**(थ)** 'चिड़िया ने ही कहा' कविता का भावार्थ |

**अथवा**

'अन्तः सलीला' कविता का भावार्थ |

**(द)** 'ब्रह्मम राक्षस' कविता की संवेदना |

**अथवा**

'भूल गलती' कविता की भावधारा |



9F96E3C1CD55D8359CF8CE7B71B600A3